भारतीभूषण

بھارتی بھوشن

श्रीगिरिधरदास कविराज कृत

जिसमें

सम्पूर्ण अलङ्कार के लक्षण उदाहरण सहित अति

सरलता पूर्वक वर्णित हैं

पहिलीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखानेमें छपा

अक्टूबर सन् १८८८ ई०

श्रीगणेशाय नमः

अथ भारतीभूषण

लिख्यते

दोहा

॥ श्रीवल्लभ आचार्य्य के भजत भजत सब पाप ॥ श्रीवल्लभ करुणा कान्त हरत सकल संताप १ विधि भव तरनी हम भल ही जम गरूर करु नाहिं ॥ विधि भव तरनी नमत नित हरि पद मम उर माहिं २ मोहन मन मानी सदा बानी को करि ध्यान ॥ अलंकार बरनन करत गिरिधरदास सुजान ३ सुंदर बरनन गन रचित भारति भूषन रहु ॥ पढ़हु गुनहु सीखहु सुनहु सत कवि सहित सनेहु ४ अथोपमा लक्षण ॥ सोउपमा जहँ बरनिये उपमेयरु उपमान ॥ समताई शोभित सदा इमि कवि कहहिं सुजान ५ उदाहरण यथा ॥ आनन पंचानन तिलक पंचानन करि सोह ॥ खरी रमासी राधिका भरी मोद संदोह ६ उपमानादि के लक्षण ॥ जाकी समता दीजिए तिहि कहिए उपमान ॥ जाको सम करि बरनिए सो उपमेय न आन ७ उपमेयरु उपमान गत जो कछु धरम लखाय ॥ सो साधारन धर्म है इमि बरनहिं कविराय ८ समता बोधक शब्द को उपमा वाचक नाम ॥ बरने गिरिधर दास इमि लच्छन लच्छ सुदाम ९

कंबु कमल अरु बिंब फल शुक सुबरन की सीप ॥ इनहिं
आदि उपमान हैं ससुरहु कवि कुलदीप ॥२०॥ कंठ औ ग्री-
वि अलक आवली अधर नासिका श्रोन ॥ इनहिं आदि उ-
पमेय हैं वरनहिं वर बुधि भौन ॥२१॥ सुंदरता सुकुमारता
स्यामलता सुललाम ॥ ए साधारन धर्म हैं मनहरता रस
धाम ॥२२॥ लौं सो से सी सों सरिस सम समान इव तूल ॥
ए ऐसो ऐसे ए सकल उपमा वाचक मूल ॥२३॥ जिमि ति-
मि जैसोइ तैसोई यथा तथा ज्यों त्यों हिं ॥ एऊ उपमा वा-
चक हि दोय मिले ते होहिं ॥२४॥ अथ पूर्णोपमालं० ॥ उप
मान रु उपमेय जहं उपमा वाचक होइ ॥ सह साधारन ध-
र्म के पूरन उपमा सोइ ॥२५॥ उदाहरन ॥ मुख सुख करनि
सिका सरिस सफरी से चल नैन ॥ छीन लंक हरि लंक सी
बाढी ऐना से न ॥२६॥ अथ लुप्तोपमा ॥ उपमानादिक
जे कहे तिन चारिहूं प्रकारि ॥ इक बिन द्वै बिन तीन बिन
लुप्तोपमा विचारि ॥२७॥ वाचक लुप्ता प्रथम बिन उपमा
वाचक होइ ॥ द्वितिय धर्म लुप्ता कहिय धर्म रहित है सो-
इ ॥२८॥ तीजी है वाचक धरम लुप्ता सुकवि सुजान ॥ बिन
वाचक उपमेय के लुप्ता चौथी जान ॥२९॥ पंचईं है उपमान
बिन बिन वाचक उपमान ॥ छठीं धरम उपमान बिन सत-
ईं लुप्ता जान ॥३०॥ उपमान रु वाचक धरम लुप्ता अठईं जा-
नि ॥ आठ भांति लुप्तोपमा कबिजन कहहिं बखान ॥३१
॥ वाचक लुप्तोदाहरण ॥ मुख पूरन ससि सोहनो अमल
कमल दल नैन ॥ कनक बेलि कल कामिनी माखन ।

मधुरे बैन ॥२२॥ धर्मलुप्तोदाहरण ॥ बिज्जुलतासी नागरी स
जल जलद से श्याम ॥ खरे कुंज मैं छबिभरे दोऊ अति अ
भिराम ॥२३॥ वाचक धर्म लुप्तोदाहरण ॥ बैन सुधा दृग मै
न सर सैन मैन के ऐन ॥ बदन रैन पति लखहु हरि रैन चै
न बरदैन ॥२४॥ वाचकोपमेयलुप्तोदाहरण ॥ अटा उद
य होतो भयो छबिधर पूरन चंद ॥ हों बलि चलि अवलो
कियै मनमथ करन अनंद ॥२५॥ उपमान लुप्तोदाहरण
॥ सुंदर कंठ कपोत सो केहरि सी कटि खीन ॥ जेहरि झम
कावै खरी है हरि कुंज गलीन ॥२६॥ वाचकोपमान लुप्तो-
पमा ॥ भवन दीप कामिनि दिपति सरप सांस गुर लेति ॥
कौन हेतु हरि मौन वह बूझेहु उत्तरु देति ॥२७॥ धर्मोप
मान लुप्तोदाहरण ॥ घन सम रन गरजत फिरैं करैं काल
सी मारि ॥ सागर सी गंभीरता समर धीर त्रिपुरारि ॥२८॥
उपमान वाचक धर्म लुप्तोदाहरण ॥ मृग नैनी गज गामि-
नी पिक बैनी सुकुमारि ॥ केहरि कटि नारी खरी नारी ल-
खो मुरारि ॥२९॥ अथ मालोपमा ॥ जहं एकहि उपमेय के
बरने बहु उपमान ॥ ताहि कहहिं मालोपमा कवि सुजान
मतिमान ॥३०॥ उदाहरण ॥ मृग से मनमथ बान से पीन
मीन से स्वच्छ ॥ कंजन से खंजनन से मन रंजन तो अच्छ
॥३१॥ अथ रसनोपमा लक्षण ॥ कथित प्रथम उपमेय ज
हं होत जात उपमान ॥ ताहि कहहिं रसनोपमा जे जग सु
कवि प्रधान ॥३२॥ उदाहरन ॥ मति सी नति नति सी विन-
ति विनती सी रति चारु ॥ रति सी गति गति सी भगति तो मैं

पवन कुमार ॥ ३३ ॥ अनन्वय लक्षण ॥ एक काहि मैं उपमे-
यता उपमानता सु होइ ॥ दूजे सों समता नहीं यहै अन
न्वै सोइ ॥ ३४ ॥ उदाहरण ॥ तुव कीरती सी स्वच्छ तर तुव
कीरति है श्याम ॥ सुर सरिता सी सुरसरी शोभा भरी सुदा-
म ॥ ३५ ॥ उपमेयोपमा लक्षण ॥ है है ही जहं परसपर उपमे
य अरु उपमान ॥ सो है उपमेयोपमा तीजो सो समतान ॥ ३६ ॥
उदाहरण ॥ अमल कमल से नैन हैं कमल नैन से स्वच्छ
॥ रुचिर काम से श्याम हैं हरि सम काम प्रतच्छ ॥ ३७ ॥ प्र-
थम प्रतीप लक्षण ॥ उपमेयहि उपमान ज्यों कीजे गिरि-
धरदास ॥ ताकों पांच प्रतीप में प्रथम जानिये खास ॥ ३८
उदाहरण ॥ तो से सी तिय काम की तो सुख सो सकेस ॥
नव पल्लव तव अधर से कबु कंठ सम वेस ॥ ३९ ॥ द्वितीय
प्रतीप लक्षण ॥ जहं प्रतीप उपमान को गर्व हरै उपमेय
॥ दूजो कहहिं प्रतीप तेहि जिनकी बुद्धि अमेय ॥ ४० ॥ उ-
दाहरण ॥ कहा करति निज रूप को गरब गहे अविवेक ॥
रमा उमा सचि सारदा तो सी तीय अनेक ॥ ४१ ॥ तृतीय प्र
ल० ॥ अन आदर उपमेय सों जब पावे उपमान ॥ तीजो
कहहिं प्रतीप तेहि कवि अवनीप सुजान ॥ ४२ ॥ उदा-
हरण ॥ नीच पने को क्यों करत तूं उर बीच गुमान ॥ अंत
ज तोसे अधिक जग हरि है यो पहिचान ॥ ४३ ॥ चतुर्थ प्र
ल० ॥ समता लायक होय नहिं तब जाहिर उपमान ॥ गि-
रिधरदास प्रतीप सो है चतुर्थ मतिमान ॥ ४४ ॥ उदाहरण
तो सुख से सो पंकसुत अरु ससंक यह बात ॥ पर नहि

वृथा असंक कवि बुद्धि रंक विख्यात ॥ ४५ ॥ पंचमप्रतीप लक्षण ॥ व्यर्थ होइ उपमान जब बर उपमेय समीप ॥ गिरिधरदास बखानि यै पंचम ताहि प्रतीप ॥ ४६ ॥ उदाहरण ॥ देखि रूपबल कामिनी कहा उरब शी नारि ॥ कहा मैन कामैन निय कमला शैल कुमारि ॥ ४७ ॥ द्विविध रूपक लक्षण ॥ विषई विषयहि बरनियै करि अभेद तद्रूप ॥ अधिक न्यून सम करि सोई षट विधि रूपक रूप ॥ ४८ ॥ अधिकोक्ति अभेद रूपक उ० ॥ घन पक्ष चढ़ि आकाश मग चले इंद्र अरि जोइ ॥ सुधा चवत शशि छत्र सिर मो तिन अगम न होइ ॥ ४९ ॥ न्यूनोक्ति रूपक उदा० ॥ कुसुम धनुष विनु कुसुम धनु देखो कुंज गलीन ॥ चली जात जग अमल यह कमला कमल विहीन ॥ ५० ॥ समोक्ति अभेद रूपक उदा०

तुअ आनन ससि दुख हरन सुधा धरन छवि खानि ॥ रजनी रंजन रसिक प्रियतम हर आनंद दानि ॥ ५१ ॥ अधिकोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥ जस भुज वा भुज तें अधिक तीन लोक फहरात ॥ धर्म मित्र वह मित्र सों मरत कियत संग जात ॥ ५२ ॥ न्यूनोक्ति तद्रूप रूपक उदा० ॥ अपर धनेश राजनेश यह नहिं पुष्पक आसीन ॥ दुत्तिय गणेश सुवेश शुचि सोहत सुंड विहीन ॥ ५३ ॥ समोक्ति तद्रूप रूपक उ० ॥ यह पालत संसार कों घालत पर को पच्छ ॥ अपर मनोहर रूप धर अंबुज अच्छ प्रतच्छ ॥ ५४ ॥ परिणाम ल० ॥ बरन नाय उपमान ह्वै जबै करै कछु काम ॥ गिरिधरदास बखानि स तासु नाम परिनाम ॥ ५५ ॥ उदाहरण० ॥ पद

पंकज तें चलत बर कर पंकज लै कुंज ॥ मुख पंकज तें क-
हत हरि बचन रचन मुद मंज ॥ उल्लेख लक्षण० ॥ एक हि
बहु बहु विधि लखैं इक हि बरनि वहु रीति उल्लेखा लंकृत
उभय कवि बरनहिं करि प्रीति ॥ ५७ ॥ प्रथम उल्लेख उ० ॥
तियन काम जादवन हित नंद सुवन नव अंग ॥ लख्यौ
कंस जम मुनिन हरि मोहन मविसे रंग ॥ ५८ ॥ द्वितीय उ-
ल्लेख उदा० ॥ तेज तरनि मुद दानि शशि शत्रुन काल मुदा-
म ॥ ब्रजनारिन कौं काम से अहो सदा घन श्याम ॥ ५९ ॥
सुमिरन भ्रम संदेह ल० ॥ सुमिरन भ्रम संदेह ए अलंका-
र हैं तीन ॥ लक्षण लक्षित नाम मैं बरनहिं सुकवि प्र-
वीन ॥ ६० ॥ सुमिरन उ० ॥ सुनि कोकिल धुनि बचन की
आवति है सुधि मोहि ॥ लखि शशि मुख की होति सुधि
तन सुधि घन कौं जोहि ॥ ६१ ॥ भ्रम उदाहरण ॥ जानि श्या-
म घन घन तुम्हैं नाचि उठे वन मोर ॥ हेम सलाका मानि
तोहि चोर फिरैं सब ओर ॥ ६२ ॥ संदेह उदाहरण ॥ रमा कि
राधा कै गिरा गिरिजा कै रति जानि ॥ श्याम काम धौं क-
लपतरु नारायण मुद दानि ॥ ६३ ॥ शुद्धापन्हुति लक्षण ॥
धर्म दुरावे औरही करि आरोप सुजान ॥ शुद्धापन्हुति क-
हहि तेहि अलंकार मति मान ॥ ६४ ॥ उदा० ॥ पहिरे श्या-
मन पीत पट घन मैं विज्जु विलास ॥ सिर सारी नहिं ता-
स की इंदु कला परकास ॥ ६५ ॥ हेत्वपन्हुति ल० ॥ सोइ
शुद्धापन्हुति विषे उक्ति जुक्ति जुत यत्र ॥ गिरिधर दास
बखानि सो हेतु अपन्हुति तत्र ॥ ६६ ॥ उदा० ॥ तियन निस

घन वन चलै हेम बेलि नहिं जाय ॥ छरकि जलद तें जल-
द वहु दामिनि जात लखाय ॥ ६७ ॥ पर्यस्तापन्हुति ल० ॥
और विषें गुन और को जब कीजे आरोप ॥ तब पर्जस्ताप-
न्हुती इमि कवि कहहिं सचोप ॥ ६८ ॥ उदा० ॥ नहीं सक्रसु-
रपति अहैं सुरपति नंद कुमार ॥ रतनाकर सागर नहीं म-
थुरा नगर वजार ॥ ६९ ॥ हेतु पर्जस्तापन्हुति लक्षण ॥ पर्ज-
स्तापन्हुति विषें हेतु सहित जो कोइ ॥ धर्म छपावै हेतु ।
जुत वही नाम तब होइ ॥ ७० ॥ उदाहरण ॥ तम हर रवि नहिं
हरिभजन लगी होइ रवि लोक ॥ कहुं तम रहै न हरि भजे ।
इमि वरनहिं मति ओक ॥ ७१ ॥ भ्रांतापन्हुति ल० ॥ भ्रांति
और की और जब करै बचन सों नास ॥ भ्रांतापन्हुति ।
कहहिं तेहि कविजन गिरिधरदास ॥ ७२ ॥ उदाहरण ॥
जीवन दीनो श्याम घन सजनी रजनी आइ ॥ कौं सखि
विन बरसात के नहिं नहिं गोकुल राइ ॥ ७३ ॥ छेकापन्हुति
ल० ॥ संका नासै और की सांची बात दुराइ ॥ छेकापन्हु-
ति कहत हैं ताहि कविन के राइ ॥ ७४ ॥ उदा० ॥ ऐंचि ची-
र तन सच्छन कियहेर सिंगार समच्छ ॥ कुंजन में कैधौं श्या-
म सखि नहिं करील को रुच्छ ॥ ७५ ॥ कैतवापन्हुति ल०
औरहि वरनें और ई मिसि करि वर मति मान ॥ ताहिं कैत-
वापन्हुती भूषन कहहिं सुजान ॥ ७६ ॥ उ० ॥ कुच मि-
स करि मन मथ मथन तिय उर करत निवास ॥ पावस र-
मिस कर वज्र लै इंद्र देत भव त्रास ॥ ७७ ॥ उत्प्रेक्षा लक्ष-
ण ॥ उत्प्रेक्षा विधि तीन हैं इहि विधि कहहिं प्रवीन ॥

वस्तु हेतु फल रूप करि जिनकी मतिरस पीन॥७८॥ वस्तु
हेतु फल भेद वर्णन॥ वस्तु द्विविध उक्तास्पद अनुक्तास्प
द जानि॥ हेतु सुफल सिद्धास्पद असिद्धास्पद मानि॥७९॥
उक्तास्पद वस्तूत्प्रेक्षोदाहरण॥ ज्वाला हल निकस्यो महा
भरत ज्वाल की जाल॥ सिंधु मथत मानो कढ़ी बड़वानल
की ज्वाल॥८०॥ अनुक्तास्पद वस्तूत्प्रेक्षोदाहरण॥ बरष
त मानो चंद्रमा किरिन बज्र कन बान॥ सावन में धावन
लगे घनु घम गन असमान॥८१॥ हेतु सिद्धास्पदोत्प्रेक्षो
दाहरण॥ सुभ्र करातेल सत मनु गहीं हिंडोरा डोर॥ तेप
ट छाया परत मनु स्यामल नंद किशोर॥८२॥ हेतु असि-
द्धास्पदोत्प्रेक्षोदाहरण॥ तोई छन समता चहत मानहु
तीछन बान॥ छूरि महीप कमान सों लेहिं मृगन को मा-
न॥८३॥ फल सिद्धास्पदोत्प्रेक्षोदाहरण॥ मोहि लखि
चपला सकुचि पुनि घन में जाति समाइ॥ यों गुनि तिय
मनु मूंदि मुख मंदिर बैठी आइ॥८४॥ फल असिद्धास्प-
दोत्प्रेक्षोदाहरण॥ तो कटि समता हेतु मनु सिंह करत
बनवासु॥ कुच समता हित सहत मनु गिरि हिम घाम
बतास॥८५॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक॥ उत्प्रेक्षा व्यंजक मनहुं
मनु जनु आदिक आहिं॥ जहां नहीं ए जानिए गम्योत्प्रे
क्षा ताहिं॥८६॥ गम्योत्प्रेक्षोदाहरण॥ तोरि तीर तरु के।
सुमन बर सुगंध के भौंन॥ जमुना तो पूजन करत वृन्दा
बन की पौन॥८७॥ रूपकातिशयोक्ति लक्षण॥ जहं उप
त्तक उपमेय को कहि केवल उपमान॥ रूपकातिशयोक्ति

त्तिहि वरनहिं बुद्धिनिधान ॥ ८८ ॥ उदाहरण ॥ ससि में वि-
द्रुम ता विषें कुंदा वलि दरसाइ ॥ तापैं सुक सुक पैं धनुष
त्तिवि सर सहित्त लखाइ ॥ ८९ ॥ सापन्हव रूप कातिशयो-
क्ति लक्षण ॥ पर्य्यस्तापन्हुति सहित यही अलंकृत यत्र ॥
सापन्हव रूपक सहित अतिशयोक्ति है तत्र ॥ ९० ॥ उदाहर
ण ॥ तुम्र मुखमें निवसत सुधा हे राधे सुकुमारि ॥ ताहि
वखानें चंद्रमा विन बूझें भ्रम धारि ॥ ९१ ॥ भेदकातिस-
योक्ति लक्षण ॥ औरै पद भेदक जहां आतिशयोक्ति में
होइ ॥ भेदकातिशय उक्ति वर अलंकार है सोइ ॥ ९२ ॥
उदाहरण ॥ अवलोकनि वोलनि हंसनि डोलनि औरै
और ॥ आवनि मृदु गावनि सबै औरै याके तौर ॥ ९३ ॥
संवधातिशयोक्ति लक्षण ॥ जहां देत संवध सों सुकवि
असयोगहि योग ॥ संवधातिशयोक्ति तिहि वरनत पंडित
लोग ॥ ९४ ॥ उदाहरण ॥ चलत अवधपुर पियत जलनभ
सरिकों भरि सुंड ॥ कलस लेत ध्रुव धाम के तुम्हरे गजभ-
सुंड ॥ ९५ ॥ असंवधातिशयोक्ति लक्षण ॥ जोगहि करि-
य अजोग जव मति अनुसार प्रकास ॥ असंबंध अति
शय उकुति कहिये गिरिधर दास ॥ ९६ ॥ उदाहरण ॥ रवि
पावे सनमान कों तेज देखि तुम भूप ॥ पवि सरतें कवि
वुद्धि तें सदा निरादर रूप ॥ ९७ ॥ अक्रमातिशयोक्ति लक्षण
॥ कारण सों कारज जवै दुहूँ वरनियें संग ॥ अक्रमातिश-
य उक्ति सों भूषन कविता अंग ॥ ९८ ॥ उदाहरण ॥ उठों सं-
ग गजकर कमल चक चक्र धर हाथ ॥ करतें चक सु नक-

सिर धारतें विलस्यो साथ ॥१९९॥ चपलातिशयोक्ति लक्षण ॥ कारन के नाम हि सुने कारज आसु हि होइ ॥ चपला अतिशय उक्ति यह अलंकार है सोइ ॥२००॥ उदाह० ॥ जान कह्यो परदेश पिय सुनि सूखी यों बाल ॥ मुंदरी कर पहुंची भई पहुंची उर की माल ॥२०१॥ अत्यंतातिशयोक्ति ल० ॥ पूर्वापर क्रम ना मिले जाको गिरिधरदास ॥ अत्यंतातिशयोक्ति तेहि कविजन करहिं प्रकास ॥२०२॥ उदा० ॥ हनूमान की पूछ में लगन न पाई आगि लंका सिगरी जरि गई गए निशाचर भागि ॥२०३॥ तुल्ययोगिता ल० ॥ क्रिया और गुन करि जहां धर्म एकता होइ ॥ वर्णन को कै इतर को तुल्य योगिता सोइ ॥२०४॥ प्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥ अरुन उदय अवलोकि कै सकुचहिं कुवलै चोर ॥ इंदु उदय लखि स्वैरिनी वदन वनज चहुं ओर ॥२०५॥ अप्रस्तुत तुल्य योगिता उदाहरण ॥ लखि तेरी सुकुमारता सरीयाज गमाहिं ॥ कमल गुलाब कठोर से काकों भासत नाहिं ॥ २०६॥ द्वितिय तुल्य योगिता लक्षण ॥ तुल्य वृत्ति हित अहित में जब वरनिय निरधारि ॥ तुल्य योगिता अपर यह वरनहिं सुकवि विचारि ॥२०७॥ उदाहरण ॥ गिरिधरदास जहांन में तुम अति चतुर सुजान ॥ सर क्रीड़ा करि हरत हौ तियको अरि को मान ॥२०८॥ तृतीय तुल्य योगिता लक्षण ॥ सम करि एउत्तकृष्ट गुन बहु को एकहि ल्याइ ॥ तुल्य योगिता तीसरी ताहि कहैं कविराइ ॥२०९॥ उदाहरण ॥ तुम विधि बुध विधु विबुधपति विधुधर बुद्धि निधान ॥ तुम

भूप हौ कल्प तरु गुन निध चतुर सुजान ॥२२०॥ दीपकलक्षण०
जहं अवर्ण्य अरु वर्ण्यको धर्म एक गुनि लेहु ॥ अलंकार दीपक
यही नाम तासु कहि देहु ॥२२१॥ उदा० ॥ सोहत भूपति दान सें फ-
ल फूलन आराम ॥ ऊंचे तन सों द्विरद वर गति सों अश्व सु
दाम ॥२२२॥ आवृत्त दीपकल० ॥ आवृत्त दीपक तीन विधि
पद आवृत्त इक जानि ॥ अर्था वृत्ति पद अर्थ की आवृत्ति
तुमि पहिचानि ॥२२३॥ पद आवृत्ति दीपक उदा० ॥ नंदसु
वन व्यारु करत वाढी प्रीति अघोर ॥ परसत्ति सुंदरि सरस
तिय परसत दृग दृग कोर ॥२२४॥ अर्था वृत्ति दीपक उदा०
॥ दौरहिं संगर मत्त गज धावहिं हय समुदाइ ॥ नदहिं रंग
महिं वहु नटी नाचहिं नट हरषाइ २२५ ॥ पदार्था वृत्ति
दीपक उदा० ॥ गरजत हैं रन राम जू गरजत है दससीस ।
धावत हिमि भरि रजनि चर दुहुं दिशि धावत कीस ॥
२२६ ॥ प्रति वस्तूपमा लक्षण ॥ होहिं वस्तु प्रति सम जवै
उपमेय अरु उपमान ॥ जुदे जुदे पद करि कही प्रति वस्तूपम
जान ॥२२७॥ उदाहरन ॥ साधु संग पायहु नहीं खलको
खलपन जाय ॥ सुधा पिआ एहु अहि नहीं तजै गरल
दुखदाय ॥२२८॥ दृष्टान्तल० ॥ वर्ण्य अवर्ण्य दुहून को
भिन्न धर्म दरसाइ ॥ जहां विंव प्रति विंव सों सो दृष्टांत क-
हाइ ॥२२९॥ उदाहरण ॥ रूपवती तुमहीं अहो रती पर-
म तौ जानि ॥ नृप तुमहीं ज्ञानी अहो दानी सुरतरु मानि ॥
२३० ॥ निदर्शना लक्षण ॥ तीन प्रकार निदर्शना कवि व-
रनहिं स विवेक ॥ सदृश दोउ वाक्यार्थ को एकारोपन ।

न एक॥२२१॥उदाहरन ॥ जो दाता को सरल चित नहीं कु-
टिलता भास॥पूरन विधु अकलंकता जानिय गिरिधर-
दास॥२२२॥द्वितिय निदर्शना ल०॥उपमानो उपमेय को ध-
र्म धरै जब त्याइ॥पलटे हूं सुनि दर्शना द्वितिय कहहिं क-
विराइ॥२२३॥उदाहरण॥लई चपलई मीन की तो दृग
नारि निहारु॥नृपतो पानि उदारता लीनी सुरतरु चारु
॥२२४॥तृतीय निदर्शना ल०॥जहं सदर्थ असदर्थ को
बोध क्रिया करि होइ॥तीजी तहां निदर्शना बरनहिं क-
वि सब कोइ॥२२५॥सदर्थ उदाहरण॥गुरु पादोदक सि-
र धरिय सदा जतावत एहु॥सिर धारत हैं गंग को महादे-
व करि नेहु॥२२६॥असदर्थ उदाहरन॥निडर पनो करि
बदन को नास जनावत जाति॥करत मसाल मुकाबिले
बाती तुरत बुझाति॥२२७॥व्यतिरेक ल०॥बरनिय बर्न्य
अबर्न्य मैं जहं विशेष कविराइ॥अधिक न्यून सम भेद
करि सो व्यतिरेक कहाइ॥२२८॥अधिक उदाहरन०॥भूप
कल्पतरु से अहैं विभव बुद्धि विशेषि॥तिय पल्लव से लो-
अधर अधिक अमृत रस पेखि॥२२९॥न्यून उदाहरन०
हरि से हरिजन जानु पै हरि घर घर बिस्राम॥कुटिल सर्प
से पै सरप डस तहि करत तमाम॥२३०॥सम उदाहरन
जो निज धैर्य सैं परत चूर करत दलिताहि॥पथ्य संग पै
गहत नहि खल खल वृंद सदाहि॥२३१॥सहोक्ति ल०॥
जहं मन रंजन बरनिये एक संग बहु बात॥सो सहोक्ति-
आभरन है ग्रंथन मैं विख्यात॥२३२॥उदाहरन०॥आदि

चतुराई लखि तरुनाई नो अंग ॥ मन मोहन सें मन मि-
ल्यो इन नैनन के संग ॥२३३॥ विनोक्ति लक्षण ॥ द्वै विध
कहहिं विनोक्ति को सुकवि बुद्धि के ऐन ॥ प्रस्तुत कछु
विन न्यून अरु कछु विन सोभा दैन ॥२३४॥ प्रथम वि-
नोक्ति उदाहरण ॥ कवि विन नहिं सोहै सभा निसि विन
सुधानिवास ॥ फबत न गिरिधरदास विन गिरिधर गि-
रिधरदास ॥२३५॥ द्वितीय विनोक्ति उ० ॥ धन्य धन्य तो
को धनी बिना गरब सरसात ॥ राम राज तव सुयश करत
म कर पुनि दरसात ॥२३६॥ समासोक्ति लक्षण ॥ प्रस्तु-
त मैं जबहीं फुरै अप्रस्तुत वृत्तांत ॥ समासोक्ति भूषन क-
हैं ताको कवि कुल कान्त ॥२३७॥ उदा० ॥ सजनी रजनी
पाइ शशि विहरत रस भरपूर ॥ आलिंगत प्राची मु-
दित कर पसारि कै सूर ॥२३८॥ परिकर लक्षण ॥ जहां वि-
शेष न दीजिये सह आसय अभिराम ॥ गि धरदास
सखा निधि भूषन करि परनाम ॥२३९॥ उदा० ॥ चक्रपा-
नि हरि को निरखि आसु ज्ञान भजि दूर ॥ रस बरसत घ-
नश्याम तुम तापहरन मुद पूर ॥२४०॥ परिकरांकुर लक्ष-
ण ॥ जहां विशेष्यहि बरनिये अभिप्राय के संग ॥ परिक-
रांकुर तासों कहैं भूषन कविता अंग ॥२४१॥ उदाहरण ॥
मीरस भीने आज बहु पियत कहैं कुबोल ॥ आवत
हीं सुजवान तो सूर प्रताप अतोल ॥२४२॥ श्लेषलक्षण ॥
हित अर्थ बहु श्लेष है भूषन कहहिं प्रवीन ॥ वर्ण अ-
र्थ दुहुंन के आश्रित भेद सु तीन ॥२४३॥ प्रकृतानेक

विषयश्लेषोदाहरण०॥ अहि सवार अरि वान जिम नरवद
लाक जिन काक॥ विजय मित्र बल बंधु सुत मधु कृत सुप
री साक॥२४४॥ अप्रकृतानेक विषय श्लेषोदाहरण०॥ तिय
तें ऐसी चंचला जीवन सुखद सम च्छ॥ बसति हृदय घ
न श्याम के बर सारंग सुअच्छ॥२४५॥ प्रकृताप्रकृतानेक
क विषय श्लेषोदाहरण०॥ रति बल्लभ कर कुसुम बर रंग
श्याम घन चारु॥ विष मैं सर पदुमैं गहे काल चार केसुब
दारु॥२४६॥ अप्रस्तुतप्रशंसालक्षण०॥ अप्रस्तुत बरनन
विषै प्रस्तुत जान्यो जाय॥ अप्रस्तुत परसंसतें हि कहहिं
कबिन के राय॥२४७॥ उदाहरण०॥ धन्य शेष सिर जगत
हित धारत भुवि को भार॥ ढुरो बाघ अपराध बिनु मृग को
करत अहार॥२४८॥ प्रस्तुतांकुर लक्षण०॥ प्रोतनप्रस्तुत को
जबै प्रस्तुत ही सों होइ॥ प्रस्तुत अंकुर आभरन ताहि क
हहिं सब कोइ॥२४९॥ उदाहरण०॥ हूंगक तजि मंदा कि
नी सरिता छुद्र अन्हात॥ कहा अलीतजि मालती साल
मली ढिग जात॥२५०॥ पर्य्यायोक्तिलक्षण०॥ कहिय बात
रचनान करि पर्यायोक्ति बखानि॥ मिसु करि कारिज साधि
ये यही अलंकृत जानि॥२५१॥ प्रथम उदाहरण०॥ जाको
मन सब जगत प्रति जग प्रमाण इक स्वांस॥ तिनके सबके
चरण कों बंदत गिरि धर दास॥२५२॥ द्वितीय पर्य्यायोक्तिउ
दाहरण०॥ सुंदर श्यामा श्याम दोउ परिकर होहु त आज॥
तबलौं आवति होइ मैं वा बन करि कछु काज॥२५३॥ व्या
जस्तुति ल०॥ व्याज स्तुति निंदा मिसौ स्तुति जहँ बरनी जाइ॥

निंदा मिस स्तुति मिसौ स्तुति बरनहिं कविराय ॥२५४॥ निं
दा व्याज स्तुति को उदाहरण० ॥ भक्त बत्सल धन स्याम जू
तुम सों अहैं न और ॥ रावत सबके मन हिंहैं कहूं सांझ
कहूं भोर ॥२५५॥ अस्तुति व्याज निंदा को उदाहरण० ॥
यमुना तुम अविवेकिनी कौन लियो यह ढंग ॥ पापिन
सों निज बंधु को मान करावत भंग ॥२५६॥ अस्तुति व्या
ज स्तुति को उदाहरण० ॥ एक बार नामहिं लिये करत को
टि अघ नाश ॥ धन्य संत जो उर करत ऐसे केसव वास
॥२५७॥ व्याज निंदा लक्षण० ॥ जहं निंदा के व्याज करि निं
दा ही दरसाय ॥ ताहि व्याज निंदा कहैं अलंकार कविरा
य ॥२५८॥ उदाहरण० ॥ नरक द्वार नारी विषै रहत सदा
लय लीन ॥ गरक पाप महं तोहिं धिक कामी बुद्धि विहीन
॥२५९॥ आक्षेप लक्षण० ॥ तीन भांति आक्षेप हैं कवि
बरनहिं सविवेक ॥ कही बात कों समुझि काहु करै निषेध
सुएक ॥२६०॥ जहां निषेधाभास तहं है आक्षेप द्वितीय ॥
छिप्यो निषेध रहै जहां आज्ञा प्रगट तृतीय ॥२६१॥ प्रथमा
क्षेप उदाहरण० ॥ हरि दीजै बैकुंठ कै वृन्दाबन को वास ॥
सर्वभौम भूपति करौ अथवा अपनो दास ॥२६२॥ द्विती
य आक्षेप उदाहरण० ॥ मैं कवि हौं नहिं भूमि पति तुम
से तुम जग माहिं ॥ नहिं मैं दूती राधि के तुम बिन हरि वि
लखाहिं ॥२६३॥ तृतीयाक्षेप उदाहरण० ॥ जाहु जाहु प
देश पिय मो हिन कछु दुख भीर ॥ प्रान आपु संग जाइ
गो रहिहै है इतै शरीर ॥२६४॥ विरोधाभास लक्षण० ॥

भासै जहां विरोध सो अहै विरोधाभास ॥ भूषन हूमि वरन न करहिं कवि जन गिरिधरदास ॥ २६४ ॥ उदाहरण ॥ १ मोहन है तोहि मोह अति याकी उर के माहिं ॥ चार चखु नृप दृग दोऊ पंकज से दरसाहिं ॥ २६६ ॥ विभावना लक्षण ॥ पट विधि होति विभावना बिन कारन के काज ॥ द्वितीय अपूरन हेतु तें पूरन कारज साज ॥ २६७ ॥ प्रतिबंधक के अछतहूं कारज होइ तृतीय ॥ काज अकारन तें जहां सो चतुर्थ कथनीय ॥ २६८ ॥ उपजै हेतु विरुद्ध तें कारज पंचम सोइ ॥ कारन जनमें काज तें छठी विभावन होइ ॥ २६९ ॥ प्रथम वि० उ० ॥ बिन मादक हरि नैन तुव घूमत अरुन लखाय ॥ बिन मेहंदी करतल अरुन बिन जावक के पाय ॥ २७० ॥ द्वितीय वि० उदाहरण ॥ एक चक्र रथ वैठि रवि फिरत करो रन कोस ॥ करत अरध कर पग अहन सारथि पनो अदोस ॥ २७१ ॥ तृतीय वि० उदाहरण ॥ श्याम हृदय सुमिरत तऊ अति उज्ज्वल मन होइ ॥ कीव हरत पर नहु तऊ खगि लहत अघ खोइ ॥ १७२ ॥ चतुर्थ वि० उदाहरण ॥ विद्रुम मैं ते हैं कढ़ी कुंदकली समुदाय ॥ दिवस प्रकाशित देखियत नखत सहित द्विजराय ॥ २७३ ॥ पंचम वि० उदाहरण ॥ सीतल मंद सुगंध जुत ताप चढ़ावत पौन ॥ फूल्यो लखि उडुपति उदय अंबुज आनंद भौन ॥ २७४ ॥ षष्ठी वि० उदाहरण ॥ पंकज तें निकसी नदी सोहत ॥ गिरिधरदास ॥ कल्प वृक्ष तें रतन निधि निकस्यो सहित हुलास ॥ २७५ ॥ विशेषोक्ति ॥ पुष्कल कारन हैं

कारज उपजै नाहिं॥ विशेषोक्ति तेहि कहत हैं कविज-
न जग के माँहि॥२७६॥ उदाहरण॰॥ हृदय श्याम घन
जनित रस करत सबहि छन बास॥ तऊ तहाँ को ताप-
नहिं नेकहु होत हिरास॥२७७॥ असंभव लक्षण॰॥
कार्य सिद्ध की बरनियै असंभाव्यता यत्र॥ अलंकार
उर आनियै सुकवि असंभव तत्र॥२७८॥ लंक जारि
है मारि है कोटिन भट बल भौन॥ इक बन चरव-
न ना सिहै रह्यो जानतो कौन॥२७९॥ असंगति
लक्षण॰॥ काज हेतु इन दुहुन की असंभाव्यता य-
त्र॥ अति विरुद्ध जानौ परै प्रथम असंगति तत्र॥२८०
उदाहरण॰॥ सिंधु जनित गरहर पियो मरे असुर समु
दाय॥ नैन बान नैनन लग्यो भयो करेजे घाय॥२८१॥
द्वितीय असंगति लक्षण॰॥ और ठौर के काज कों औ-
र ठौर करि देइ॥ द्वितिय असंगति समुझियै सुकवि स
मूह निसेइ॥२८२॥ उदाहरण॰॥ शीश महावर आँख
पैं अंजन रंजन रूप॥ आजु भोर आये अहो चखव ने
ब्रजभूप॥२८३॥ तृतीय असंगति ल॰॥ और कार्य आ-
रंभियै और कीजिये यत्र॥ तीन असंगति मैं तृती
य असंगति तत्र॥२८४॥ उदाहरण॰॥ दुख गोपन कों
करन हित चले गोप सिरमौर॥ दुख गोपन कों नाकि-
यो आधिको कीनो और॥२८५॥ विषम लक्षण॰॥
तीनि भाँति बरनन करहिं कवि विषमालंकार॥ आ-
न मिलते कों संगति जानहु प्रथम प्रकार॥२८६॥

कारन औरैं रंग को कारज औरैं रंग ॥ तृतिय इष्ट उद्यम किये लहै अनिष्टहि संग ॥ १८७ ॥ प्रथम विषम उदाहरण ॥ कहं कोमल दशरथ सुवन कहँ कठोर धनु ईश ॥ कहं सुद्र योजन अमित अति अगाध कहँ कीश ॥ १८८ ॥ द्वितीय विषम उदाहरण ॥ दीरव सिखा रंग पीत तें धूम कढ़त अति श्याम ॥ सेत सुयश छायो जगत भगट आपतें श्याम ॥ १८९ ॥ तृतीय विषम उदाहरण ॥ वनवारी हित वन गई मिलेन गोप मयंक ॥ लौटें नारि घर की सबै झूठहि देहिं कलंक ॥ १९० ॥ सम लक्षण० ॥ वरनत तीन प्रकरहैं सुकवि समालंकारु ॥ यथा योग को संग इह प्रथम जानिये चारु ॥ १९१ ॥ कारन कारज दुहुन को एकहि संग द्वितीय ॥ जाहित उद्दम करिय फल पाइय तो नद्तीय ॥ १९२ ॥ प्रथम सम उदाहरण० ॥ उचित सीस पैं सोहतो कस्तूरी को बिंदु ॥ सरस सरद राका बिषें उदित सुलै सो इंदु ॥ १९३ ॥ द्वितीय सम उदाहरण० ॥ वचन चंद्र की चंद्रिका हरत ताप मुददानि ॥ ब्रजरानी घन श्याम सों सुत जायो छवि खानि ॥ १९४ ॥ तृतीय सम उदा० ॥ हरि ढूंढन ब्रज में गई पाये गिरिधर लाल ॥ व्याह किये सुख हेतु सो देति सुकीया बाल ॥ १९५ ॥ विचित्र ल० ॥ करै यतन विपरीत जहँ फल पावन के हेत ॥ सो विचित्र भूषन अहै वरनत बुद्धि निकेत ॥ १९६ ॥ उदाहरण० ॥ सुख इच्छा सों सुख तजैं जोगी हर्ष समेत ॥ धन लोब कारन धानि धनी धन हिंहैं देत ॥ १९७ ॥ अधिक लक्षण

जहां प्रथुल आधार तें अधिक अधेय सुहोय॥ पृथुल॰ अधार अधेयतें अधिक अधिक सहोय॥ १९८॥ प्रथम अधिक उदाहरण॰॥ उपमा उदधि अपार में नहिं समात मुखचंद॥ ज्ञान कथा विस्तार मैंला वरनन नद नंद॥ १९९॥ द्वितीय अधिक उदाहरण॥ किते रूप घन श्याम को रोम रोम ब्रह्मंड॥ किती जसोदा गोद जित खेलत ब्रह्म अखंड॥ २००॥ अल्प लक्षण॰॥ होय अल्प आधेयतें औरअल्प आधार॥ गिरिधर दास बखानियें तिहि अल्पालंकार॥ उदाहरण॰॥ २०१॥ पर मानहुतें परम लघु मंगन॰ जग विख्यात॥ सोऊ तेरे हृदय महं लोभी नाहि समात॥ २०२॥ अन्योन्य लक्षण॰॥ जहं उपकार परस्पर हि॰ वरनत करि निरधार॥ ताको कविजन कहत हैं अन्योन्यालंकार॥ २०३॥ उदाहरण॰॥ नृपतें सेना सोहती सेनातें नर जात॥ दूलहतें से बरात सों दूलह सों बरियात॥ २०४॥ विशेषलक्षण॰॥ तीन प्रकार विशेष है कवि वरनहिं गुनि थेय॥ प्रथम ख्यात आधार विन जहं बरनिय आधेय॥ २०५॥ एक वस्तु कहं वरनिए ठौर अनेक द्वितीय॥ जहां अल्प उद्यम किये बहुत सिद्धि तृतीय॥ २०६॥ प्रथम विशेष उदा॰॥ गए तमीहूं तम रह्यो कोठरी बीच समाइ॥ कमल बिना कमलालया वह बैठी दरसाय॥ २०७॥ द्वितीय विशेष उदाहरण॰॥ सोवत जागत दिशि बिदिश देखि परैं घन श्याम॥ कंस हृदय आहु पहर हास करैं विश्राम॥ २०८॥ तृतीय विशेष उदाहरण॰

गीता के पढ़तहि पढ़े चारि वृंद सह तत्व ॥ वृंदावन ल-
खन हिलायो गाऊ लोक सुभ सत्व ॥२०९॥ व्याघात ल०
जौन वस्तु तें होइ जो तासु विरोधी जौन ॥ तिही वस्तु सें
होइ जब है व्याघात सुतौन ॥२१०॥ उदाहरण० ॥ जासु
मिरन सें भक्तजन पावहिं पद निर्वान ॥ ताही सें स नि-
जगत जन भ्रमत फिरहिं अज्ञान ॥२११॥ द्वितीय व्याघा-
त लक्षण ॥ काज विरोधी काज ही जहाँ समर्थ्यो जात
काज हेतु हीं सें जहाँ सो दूजो व्याघात ॥२१२॥ उदा० ॥
कर्म करहिं भव बंध हर योगी श्रुति अनुसार ॥ परमहंस कर
महिं तजहिं तिहि डर करि निरधार ॥२१३॥ कारन माला
लक्षण० ॥ कार्य हेतु जहँ पूर्व को पर को उत्तर जो होइ ॥
ऐसी जहाँ परंपरा कारन माला सोइ ॥२१४॥ उदाहरण०
दल तें बल बल तें विजय तातें राज हुलास ॥ कृत तें सुत
सुन तें सुजस जस तें दिवि महँ वास ॥२१५॥ उलटि यथा
धन गुन तें गुन पढ़न तें पढ़िबो गुरु तें होइ ॥ गुरु सुकर्म
तें सुभ करम करिये उत्तम जोइ ॥२१६॥ एकावली ल०
क्षण० ॥ ग्रहन मुक्ति की रीति सों जहाँ अर्थ की श्रेणि
अलंकार एकावली ताहि कहहिं कवि मौलि ॥२१७॥
उदाहरण० ॥ पढ़िबे गुनिबे लौं गुनन अभ्यासन लौं
जानि ॥ अभ्यासहु निज ज्ञान लौं ज्ञान भक्ति लौं मानि
२१८ ॥ माला दीपक लक्षण० ॥ मिलि दीपक एकावली
माला दीपक होइ ॥ इमि वरनहिं आभरन यह कवि को-
विद सब कोइ ॥२१९॥ उदाहरण० ॥ जग जश तें जस (

धरम तें धरम करम तें चारु ॥ करम वेद वचनानि तें भखो भूमि भरतारु ॥ २२० ॥ सार लक्षण० ॥ सरस एक तें एक जहँ अलंकार तहँ सार ॥ कहुँ स्तुति कहुँ निंदमय कहुँ उभय व्यवहार ॥ २२१ ॥ स्तुतिमय उदाहरण० ॥ पूज्य नरन तें अमर अनि तिनंतें हरि भगवान ॥ पूज्य हरिहु तें हरि भगत जाउर उनको ध्यान ॥ २२२ ॥ निंद्यमय उदाहरण ॥ सब तें लघु मसमसक तें रजकन पुनि परमानु ॥ परमानहुं ते गुनि रहित जानत जिनहि जहानु ॥ २२३ ॥ उभय मय उदाहरण० ॥ बली त्रिदश पुनि दसबदन तातें बालि सगर्व । बली बालि तें लोभ है हयो अनुज धन सर्व ॥ २२४ ॥ यथासंख्य लक्षण० ॥ क्रम तें उक्त पदार्थ को क्रमतें अन्वय यत्र ॥ कवि भूषण भूषण अहै यथासंख्य तत्र ॥ २२५ ॥ उदाहरण ॥ सुर कौं अरि कौं मित्र कौं भृत्य रंक कौं भूप ॥ पूजहु मारहु आदरहु रखहु देहु अनूप ॥ २२६ ॥ पर्य्याय लक्षण० ॥ क्रम हीं सौं जहँ एक कौं होय अनेक अधार । कै अनेक को एक ही है पर्य्याय प्रकार ॥ २२७ प्रथम पर्य्याय उदाहरण ॥ हुती देह मैं लरिकई बहुरि तरुणाई जोर ॥ बिरुधाई आई अवो भजत न नंद किशोर ॥ २२८ ॥ द्वितीय पर्य्याय उदाहरण० ॥ मेरोई मन मोहित जिहिं रितन कियो निवास ॥ ताहू कौं तजि कौं बस्यौ अबसैं तिन के पास ॥ २२९ ॥ परिवृत्ति ल० ॥ थोरे ई दीने जहाँ बहुत पदारथ लेत ॥ अलंकार परिवृत्ति तेहि बरनहिं बुद्धि निकेत ॥ २३० ॥ उदाहरण ॥ बिंध्याचल मैं गंग ।

अल अर्क सुमन लै सेत ।दैकै देव कपर्दि कहं जात ससुर-
सेत ॥२३१॥ परी संख्या लक्षण॥ जहाँ एक ही वस्तु को
है निषेध इक ठाम ॥ दूजे पल थापन तहां परिसंख्याय-
ह नाम ॥२३२॥ उदाहरण ॥ बाल मान नैहर नहीं हैं रूठे ।
पितु धाम ।नाहिं वृज में घन श्याम हैं नभ में लसैं ल-
लाम ॥२३३॥ विकल्प लक्षण॥ एक विरोधी एक को
तिन में कहिये अर्थ॥ कै यह कै वह होइ गो सो विक-
ल्प अनवद्य॥२३४॥ उदाहरण॥ बलजू अरु अनवाय
हैं हलकै तेरो शीश ॥ यम पुर कै पुर यापि हैं तोहि अब-
हिं अवनीश ॥२३५॥ समुच्चय लक्षण॥ एक साथ ।-
ही भाव बहु कछु कारण तें यच ॥ अलं काम उर आनि
यै सुकवि समुच्चय तत्र ॥२३६॥ उदाहरण॥ फेरति
हग हेरति हरिहिं टेरति नाम सुनाय ॥ फिर तिथि रति
उझकति झुकति झकति झरोखे आय ॥२३७॥ द्विती-
य समुच्चय ल॰॥ एक एक ही हेतु तें जो कारज सिद्धि हो-
य ॥ तेहि काजहि सब मिलि करैं तृतीय समुच्चय सोय
॥२३८॥ गंगा गीता गुरु गऊ गोकुल औ गिरि राज ॥ ए-
सब मिलि कै देत हैं सत्त गति दिव्य दराज ॥२३९॥ कार-
क दीपक लक्षण॥ क्रम गति क्रिया अनेक को कर्त्ता ए-
क हि होइ ॥ कविता उपकारक अहै कारक दीपक सोइ
॥२४०॥ उदाहरण ॥ आवत पुनि अन भिख लखत ।
लखि हिय हरषात ॥ वेणु बजावत नाम लै तो हित गो-
कुल जात ॥२४१॥ समाधि लक्षण ॥ अपर हेतु तें कार्य

जहां सुगम भाग्य वस होइ ॥ सो समाधि गत व्याधि बरन-
त कवि सब कोइ ॥२४२॥ उदाहरण ॥ चलत कंत कहं का-
मिनी रोकन चहत प्रवीन ॥ मारु जात गोकुल मग आयो
घर जल हीन ॥२४३॥ प्रत्यनीक लक्षण ॥ लखि अजीत नि-
ज शत्रु कहं ता पच्छी कहं जत्र ॥ करै पराक्रम सत्य निज
प्रत्यनीक है तत्र ॥२४४॥ उदाहरण ॥ हरि शिमार त्रिपुरारि
सों महा कोप विलासि ॥ तदनु कामि मुनिवरन को सर
वेधत सर माहि ॥२४५॥ काव्यार्थापत्ति लक्षण ॥ करै काज
गुरु तिहि कहा लघु मैं वामल गति ॥ होइ उक्ति ऐसी नहां
है काव्यार्थापत्ति ॥२४६॥ उदाहरण ॥ शोक भरी मंदोदरी
बोली करि सुविचार ॥ बलसाली बाली वध्यो तोहि मार-
त को बार ॥२४७॥ काव्यलिंग लक्षण ॥ उक्त अर्थ जो पुष्ट
नहिं बिना समर्थन होइ ॥ ताहि समर्थिय युक्ति सों काव्य
लिंग है सोइ ॥२४८॥ उदाहरण ॥ अव भव पारावार के
पार जात नहिं बार ॥ हैं सहाय रघुराय जू नौका खेवनहा-
र ॥२४९॥ अर्थान्तरन्यास लक्षण ॥ जहां विशेष सामा-
न्य तें होय समर्थित वास ॥ कै सामान्य विशेष तें सो अ-
र्थान्तर न्यास ॥२५०॥ प्र० उ० ॥ हरि प्रताप गोकुल बच्यो
का नहि करहिं महान ॥ हरिन कसिपु रावण वध्यो यम सु-
ख कौन समान ॥२५१॥ द्वितीय उदाहरण ॥ कर तांबूल
प्रसंग तें पच जात नृप हाथ ॥ तैसेइ रतन प्रसंग तें वसुन
संदरता साथ ॥२५२॥ विकस्वर लक्षण ॥ कहि विशेष सा-
मान्य पुनि पुनि विशेष वहि पंथ ॥ इक इक कों इव ।

कमहिंतें करहिं विकस्वर तत्र ॥२५३॥ विकस्वर भेद० ॥ २ भेद विकस्वर में जुगल बरनत सुकवि दुहून ॥ जो विशेष संलिम सुलौ कहुं उपमान कहून ॥ २५४ ॥ प्रथम विकस्वर उदाहरण ॥ तुम देहौ मत देत हैं जिमि सुरतरु मन मानु ॥ सुनि तुम मम उर तम हर्यो सुजन रीति जिमि भानु ॥ २५५ ॥ द्वितीय वि० उ० ॥ दुर्य्योधन नहिं मानिहै खलकी औषधि हैन ॥ नींब हि गुड़ सों सींचिये होत्ति मधुता येन ॥ २५६ ॥ प्रौढ़ोक्ति लक्षण ॥ कारज गत उतकर्ष को जोन हेतु तेहि हेतु ॥ का बरनिय प्रौढ़ोक्ति कबि मान तासु कहि देतु ॥ २५७ ॥ उदाहरण ॥ जमुना नीर नहात नित मन मोहन तन स्याम ॥ तो उरोज परसे कठिन ताको उर है वाम ॥ २५८ ॥ संभावना लक्षण ॥ जो यह होइ तौ होइ यह ऐसी उक्ति सु यत्र ॥ अलंकार संभावना बरनहिं कविजन तत्र ॥ २५९ ॥ उदाहरण ॥ जौ ब्रज रज होते सुनौ लगते लालन पाय ॥ जौ खग होते तौ तुरत २ जाते जहं ब्रजराय ॥ २६० ॥ मिथ्याध्यवसिति लक्षण ॥ कथित झुठाई ताहि अति दृढ़ करिवे कों यत्र ॥ खपर झुठाई कल्पिये मिथ्याध्यवसिति तत्र ॥ २६१ ॥ उदाहरण ॥ वहति वारि परघट बिरचि शुचि शीतल करि आग ॥ हे तरुणी वस तरुणन करहु विषयरस त्याग ॥ २६२ ॥ ललित लक्षण ॥ प्रस्तुत गत वृत्तांत जो वर्णनीय तजि तौन ॥ अप्रस्तुत अति विंवत कहिय ललित मति भौन ॥ २६३ ॥ उदाहरण० ॥ अब पछिताये

होत का चुग्यौ चिरैयन खेतु ॥ चाहत्ति उतरन पारतूं विन
नाव बिन सेतु ॥ २६४ ॥ प्रहर्षन लक्षण ॥ तीन प्रहर्षन्नैं
कहै प्रथम प्रहर्षन सोइ ॥ जतन बिनाहीं लाभ जहं वां
छित फल को होइ ॥ २६५ ॥ उदाहरण ॥ जाको मिलि
वो चहत है महत मनोहर श्याम ॥ सो चलि आई आपु
ही पूछत तुम्हरो नाम ॥ २६६ ॥ द्वितीय प्रहर्षण लक्षण ॥
वांछित फलतें अधिक फल विनहीं श्रम जहं होइ ॥
कवि रस वर्षण कहत हैं द्वितीय प्रहर्षण सोइ ॥ २६७ ॥
उदाहरण ॥ चह्यो सुदामा अल्प धन दियो भूरि भग-
वान ॥ तिय हिय पिय दरशन चह्यो आयदियो तिद-
न ॥ २६८ ॥ तृतीय प्रहर्षण लक्षण ॥ तृतीय प्रहर्षन क-
हैं जहां फल साधक जु उपाय ॥ ताही को साधन करत
फल आपुहि मिलि जाय ॥ २६९ ॥ उदाहरण ॥ पियपा-
ती सुधि लेन कों निकरी नारि बजार ॥ उततें आवति
मिलि गये गिरिधर लाल उदार ॥ २६९ ॥ विषादन ल०
जो विरुद्ध चित चाहतें सोई कारज होइ ॥ ताहि विषा-
दन कहत हैं अलंकार सब कोइ ॥ २७० ॥ उदाहरण ॥
हरि सों रति इच्छा करी अतिहि चाहसों बाल ॥ सुन्यो
जात मथुरा नगर लै अक्रूर गोपाल ॥ २७१ ॥ उल्लास ल०
जहं इकके गुन दोसतें होइ और को तौन ॥ उल्लासा
लंकार तेंहि बरनहिं कवि मतिभौन ॥ २७२ ॥ कहुं गुन
तें गुन दोसतें दोस गुनहुं ते दोस ॥ दोसहुं तें गुन होत
इमि बरनत कवि मति कोस ॥ २७३ ॥ गुनतें गुन यथा ॥

तीरथ चाहैं परसि मोहि कहहिं सुपावन संत ॥ श्रोत्रिच-
हहिं पढ़ि सुफल मोहि करैं विदुष अनंत ॥ २७४ ॥ दोषतें दोष
यथा ॥ या राजा के राज्य में भूलि जाय जनि सोय ॥ राज
भृत्य धन चारि हैं तव काकहि है रोय ॥ २७५ ॥ गुनतें दोष
यथा ॥ सो घर को सु अभाग जहँ यज्ञ दान नहिं होइ ॥
सो विद्या किहि काम जेहि शिष्य हुलहै न कोइ ॥ २७६ ॥
दोषतें गुन यथा ॥ सम्भु भावत मारयो चरण हरन
कियो सुवमान ॥ लाभ हुतो इ गुन हु जो दयो विभीषण
मान ॥ २७७ ॥ अवज्ञा लक्षण ॥ गुनतें गुन नहिं होय
अरु नहीं दोषतें दोस ॥ कहहिं अवज्ञा दोय विधि इ-
मि कवि कविता कोस ॥ २७८ ॥ प्रथम अवज्ञा उदा० ॥
सुन कविताहूं के सुने नहिं हुलसै सद चित्त ॥ कसर ऊ-
पजै अन्न नहिं बरसत हूं जलनित्त ॥ २७९ ॥ द्वितीय अवज्ञा
उदाहरण ॥ शिव तुम हाला हल पियो कहा अमृत की
हानि ॥ रवि लसाये कंपत नहिं चंदन लघुता मानि ॥
२८० ॥ अनुज्ञा लक्षण ॥ जहँ अभिलाषा दोस की लि-
ही मैं गुन पाय ॥ तहां अनुज्ञा आभरन कहहिं सकल
कविराय ॥ २८१ ॥ उदाहरण ॥ हे विधि मोहि कव करहु ॥
गै नरतनतें ब्रज धूरि ॥ गो चारत गोपाल तन रहौं बात
बस पूरि ॥ २८२ ॥ लेश लक्षण ॥ दोसहि गुन करि बरनि-
ये गुनहि दोस करि यत्न ॥ कवि कुल लेश बरनन करहिं ॥
लेश अलंकृत रत्न ॥ २८३ ॥ उदाहरण ॥ बरु अरसिक प
सुही भले बधिक हि देखि पराहिं ॥ राग रसिक मृग मोह

बसबरबस मोरे जाहिं ॥२८४॥ मुद्रा लक्षण ॥ प्रस्तुत के
बरनन विषैं करै चोरको नाम ॥ पैन विदित सह पाठ के
सो मुदा गुन धाम ॥२८५॥ उदाहरण ॥ परमभाम भ्रतरु
द्रजित मल्ल सेय पद दोय ॥ हरि अवतार प्रमाण पद दो
हाई लव होइ ॥२८६॥ रत्नावली लक्षण ॥ जासु विदि
त सह पाठ है कहै नाहिं को नाम ॥ प्रस्तुत के बरनन वि
षैं रत्नावलि तिहि ठाय ॥२८७॥ उदाहरण ॥ वासकरत
आराम मैं भरत हिलन आनंद ॥ देत लखन मन को शु
निन शत्रुदमन नंद नंद ॥२८८॥ तद्गुण लक्षण ॥ रूप
आदि गुन पुंज मैं जो निज गुन तजि लीन ॥ दूजे को गु
न लेहिं तहं है तद्गुन गुन भौन ॥२८९॥ उदाहरण ॥ अति
यहि यही राधुक कुचुकी नील बरण दरसाय ॥ पिय हिय
की कंचन बरन परे परस परछाय ॥२९०॥ पूर्वरूप लक्षण ॥
पूर्व रूप है निज गुनहि तजि पुनि निज गुन लेइ ॥ दुति
य वस्तु नासेहु नहीं मिटै प्रथम सो सेइ ॥२९१॥ प्रथम उदा
हरण ॥ उपल लाल माला लिये लाल नाम सुव बाल
॥ मनिका परसत असित पुनि करतल दुति परि लाल
॥२९२॥ द्वितिय उदा० ॥ कहा भयो जो करन को यतन भ
यो नस्याय ॥ रही जगत में आपु की दीह दान विधि का
य ॥२९३॥ अतद्गुण लक्षण ॥ संगी को रूपादि गुन कछू न अं
गीकार ॥ ताहि अतद्गुण आभिरन बरनत बुद्धि उदार
२९४॥ उदाहरण ॥ सदा श्याम हिय लिय बसति सिय पुनि
य हरि विश्राम ॥ तऊ न गोरे हो न हरि श्याम होत निन ॥

श्याम ॥ २९५ ॥ अनुगुन लक्षण ॥ निज गुन सो सरसात जो तैसी
संग सहाय ॥ तातें अरु अधिकाय सो अनुगुन नाम कहा-
य ॥ २९६ ॥ उदाहरण ॥ कुटकी को पुर दे कियो निंब पत्र र-
सकाथ ॥ ता कटुता नहिं कहि सके जे पटु पंडित नाथ ॥ २९७ ॥
मिलित लक्षण ॥ समता तें इक वस्तु में अपर वस्तु छपि-
जाय ॥ कछुन भेद जान्यो परै मीलित तहां लखाय ॥ २९८ ॥
उदाह० ॥ पान पीक अधरान में सखी लखी नहिं जाय ॥ का-
जरारी अखियान में कजरारी न लखाय ॥ २९९ ॥ सामान्य-
ल० ॥ बहुत वस्तु सम होय जहँ नहिं विशेष लखि जाय ॥ जा-
नि परै सब एक से तहं सामान्य कहाय ॥ ३०० ॥ उदा० ॥ खरी
दीपमाला विषे बाला अति अभिराम ॥ को तिय को दीपक ।
सिखा मन नहिं बिचारत श्याम ॥ ३०१ ॥ उन्मीलित ल० ॥ समता
तें इक में अपर वस्तु जाय छिपि जत्र ॥ तदपि भेद कछु लखि
परै उन्मीलित है तत्र ॥ ३०२ ॥ उदा० ॥ हरित माल के कुंज में नहिं
लखाहिं छबि खानि ॥ पीतांबर सों तन छिपे तिय पिय कौं पहिचा-
नि ॥ ३०३ ॥ विशेष ल० ॥ समता संजुत वस्तु में कछु विशेष दरसा-
य ॥ जातें जान्यो जाय वह तिहि विशेष ठहराय ॥ ३०४ ॥ उदा० ॥ सेत
हंस बक सेत है वैसे पैं लखाय ॥ पय पानी आगे धरे भेद सकल
खुलि जाय ॥ ३०५ ॥ उत्तर ल० ॥ अभिप्राय संजुत जहां प्रश्नोत्तर दा-
न ॥ अलंकार उत्तर तहां बरनत बुद्धि निधान ॥ ३०६ ॥ उदा० ॥ ब-
सन कहां कैसे पथिक कहँ सलोमग धाम ॥ पै हो वा आराम में सब
विधि को आराम ॥ ३०७ ॥ चित्र लक्षण ॥ वही प्रश्न उत्तर कहँ एक
है कहि यत की निरधार ॥ अरु इक उत्तर प्रश्न बहु सो चित्रालंकार ॥

३०८ एकप्रश्नोत्तर को उदाहरण ॥ कोकिल सुंदर नादक-
र का महिं बल सुविशाल ॥ केकी बहुला बक विषें को-
समंत महिपाल ॥ ३०९ ॥ अनेक प्रश्न कोत्तर ॥ कौन स-
लैं केदार में काको थल केदार ॥ को है रेवक औषधी हर
उत्तर विधार ॥ ३१० ॥ सूक्ष्म लक्षण ॥ पर आशय लखि
वे को चेष्टा साभिप्राय ॥ उत्तर रूप अनूप जहँ तहँ सू-
क्ष्म कविराय ॥ ३११ ॥ उदाहरण ॥ लखन लख्यो रघुनाथ
दिशि निसिचर व्याहन काम ॥ तर्जनि पें धरि लवौनी ।
खैंचि लई तब राम ॥ ३१२ ॥ पिहित लक्षण ॥ ॐ ॥ ० ॥
कोऊ पर वृत्तांत लखि ताहि प्रकाशे यत्न ॥ चेष्टा साभिप्रा-
य करि पिहिता लंकृति लत्र ॥ ३१३ ॥ उदाहरण ॥ माल ला-
ल आये निरखि जावक लाग्यो भाल ॥ आतुर चातुर-
ता भरी दई आरसी बाल ॥ ३१४ ॥ व्याजोक्ति लक्षण ॥
जहँ गोपन आकार को कै बात कहि अन्य ॥ तहँ व्या-
जोक्ति बखानहीं जे कवि धरनी धन्य ॥ ३१५ ॥ उदाहरण ॥
आरज न मानी नेकहू बरज रही बहु बार ॥ बावन बहुत
गुलाब तरु कौं न लगे तन डार ॥ ३१६ ॥ गूढोक्ति लक्षण
जहँ कोऊ कहि और सों औरहि देइ सुनाय ॥ तातें लख-
हिं नानि कर जानं तहँ गूढोक्ति कहाय ॥ ३१७ ॥ उदाहरण
गूढोक्ति के दोय भाँति दरसाहिं ॥ बहु श्लेष युत देखिये क-
हुँ श्लेष जुत नाहिं ॥ ३१८ ॥ श्लेष युक्त को उदाहरण ॥ जाहु
परोसी या समय या दिन आवति बात ॥ आप पाहुन
चत्र चित्त सुगनि करोंगी बात ॥ ३१९ ॥ अश्लेष रहित को उदा०

गा छन गमन न आयहौं मीत होत तित सांझ ॥ ताते आय नहा-
यहौं सखी अकेली सांझ ॥ ३२० ॥ विवृतोक्ति लक्षण ॥
गुप्त अर्थ जहं आपुही कवि सूचित करि देत ॥ अलंकार
विवृतोक्ति तेहि कहत बुद्धि निकेत ॥ ३२१ ॥ लक्ष्य माहिं
विवृतोक्ति के गुप्त अर्थ विधि दोय ॥ शब्द शक्ति सों होय
कहुं अर्थ शक्ति सों होय ॥ ३२२ ॥ शब्द शक्ति को उदाहरण ॥
औं गोरस चाहत लियो तौ आवहु मम धाम ॥ यों कहि ।
ग्वालक सों हरि सिहि किय सूचित रति ठाम ॥ ३२३ ॥ अर्थ श-
क्ति को उदाहरण ॥ मेरो मन न अघात है सुनि झूठी रस
बात ॥ तू मि कहि झूठी बाल तब लाल लगाई गात ॥ ३२४
युक्ति लक्षण ॥ निज मर्म हिं गोपन करै कछु क्रिया करि
यत्र ॥ गिरिधरदास बखानिय युक्ति अलंकृत तत्र ॥ (
३२५ ॥ उदाहरण ॥ हरि सों रति करि तिय उठी आइ गई
लित सास ॥ चीर फसाइ करील सों ठाढ़ी लेत उसांस ॥
३२६ ॥ लोकोक्ति लक्षण ॥ लोक प्रवाद बखानिये वच-
न बीच जेहि ठौर ॥ अलंकार लोकोक्ति तेहि बरनहिं बु-
ध सिरमौर ॥ ३२७ ॥ उदाहरण ॥ कहा न सावत शोक कों
सूखो ज्ञान बताय ॥ ऊधो आप सुनी कहूं प्यास ओस
तें जाय ॥ ३२८ ॥ छेकोक्ति लक्षण ॥ अपर अर्थ व्यंजक
जहां सोइ लोकोक्ति लखाय ॥ वचन न कीरखना न तें
नहं छेकोक्ति कहाय ॥ ३२९ ॥ उदाहरण ॥ दूती पद छू-
ती कहा कोनो नहि पतिवंध ॥ होनो बनि आयो भलो
सोनो और सुगंध ॥ ३३० ॥ वक्रोक्ति लक्षण ॥ सुनत ।

वाक्य रो खादिवस रचै अर्थ जहं और ॥ कहूं श्लेष हू का-
कु सौं वक्र उक्ति तिहि ठौर ॥ ३३१ ॥ श्लेष वक्रोक्ति उदाहर-
ण ॥ मान तजो गहि सुमति वर पुनि पुनि होति न देह ॥
मान तजो गी योग कौं नहिं हम करत सनेह ॥ ३३२ ॥
काकु वक्रोक्ति यथा ॥ तोहि त्यागि श्यामहि सखी अरु
तिय नाहि सुहाय ॥ अरु तिय नाहि सोहाय सुनि बोली
नैन चढ़ाय ॥ ३३३ ॥ स्वभावोक्ति लक्षण ॥ शिशुत्वादि
जो जाति है तदगत जौन सुभाय ॥ ताको बरनन कर-
तहूं स्वभावोक्ति कविराय ॥ ३३४ ॥ उदाहरण ॥ धू-
धूरे रे धरनि मैं धात अरपरे पांय ॥ लाल लट परे आ-
खरैनि भाषत सखि हरषाय ॥ ३३५ ॥ भाविक लक्षण ॥
भूत भविष्य पदार्थ को जहां सकल कविराय ॥ बरन-
त करि प्रत्यक्ष तहं भाविक भाख्यो जाय ॥ ३३६ ॥ भूत
प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ बेणु बजावत मधुर सुर कोटिल जानत मे-
नु ॥ ऊधो आवत अजहुं हरि सांझ चरावन धेनु ॥ ३-
३७ ॥ भविष्य प्रत्यक्ष उदाहरण ॥ श्याम सिंह नृपच-
द में श्याम सिंह सम विप्र ॥ मैं देखति कर पकरि मो-
हि जात मुरघ धरि क्षिप्र ॥ ३३८ ॥ उदात्त लक्षण ॥ ॥
श्लाघनीय जो चरित सो अंग और को होइ ॥ अरु अ-
ति संपति बरनि वो है उदात्त विधि दोय ॥ ३३९ ॥ प्रथम
उदात्त उदाहरण ॥ मुनि जन ध्यावहिं जासु पद सुर
सुन पावहिं रंच ॥ ते कृष्ण जाके भवन में राजत दै दे-
मंच ॥ ३४० ॥ द्वितीय उदात्त उदाहरण ॥ तो घरतें ।

दुरहिं तनी घरी मनौ नहुहारि॥ तिन तैं भे नग नग घने
लरदहु मेरु अनुहारि॥ ३५१॥ अत्युक्तिलक्षण॥ ज-
हं उदारता सूरता बिरहादिक की उक्ति। अद्भुत मिथ्या
होय तहं अलंकार अत्युक्ति॥ ३५२॥ उदारता यथा॥
भूपति तेरे दान सों घरघर भयो सुमेर॥ अरकहिं देत
मदच्छिना अचलहिं बहु फेर॥ ३५३॥ सूरता यथा॥ तो
प्रताप डर प्रान तजि शत्रु गये यमलोक॥ दूतहु नम-
रे आइ यह तऊ हृदय डर ओक॥ ३५४॥ बिरह यथा॥
जावन बिरहिनि जातिहू जाति स्वास शिखि ज्वाल-
ता बन के साखी गिरे राखौ ह्वै तत्काल॥ ३५५॥ निरु-
क्तिलक्षण॥ जहां योग बस नाम को कल्पित औरै अ-
र्थ॥ तहं निरुक्ति भूषन कहैं कविकुल तिलक स-
मर्थ॥ ३५६॥ उदाहरण॥ जो परकीया त्यागि कै च-
ले बिदेश सचैन॥ तौ विषई तुम सांच हौं अबला-
मान हि लैन॥ ३५७॥ प्रतिषेधलक्षण॥ जहां प्रसि-
द्ध निषेध को अनुकीर्तन दरसाय॥ प्रतिषेधालंकृ-
ति कहहिं तिहि अति मति कविराय॥ ३५८॥ उदाह-
नहि बिराट को पाक वर जहं करछी व्यवहार॥ यह स-
संगर जामें चलैं बरछी बारंबार॥ ३५९॥ विधिल०॥
सिद्ध वस्तुही को जहां कोऊ करै विधान॥ विधि भूष-
न तहं जानिये इहि विधि कहहिं सुजान॥ ३५०॥
उदाहरण॥ क्रमसों पहुंचत अरक जब सक्रमकर-
क नगीच॥ जीवन मद शति होत तब जीवन मद-

जगबीच ॥३५१॥ हेतुलक्षण ॥ जहांकाजके साथही
कारन वरन्यो होइ ॥ कै दोउन की एकता होन हेतु वि-
धि दोइ ॥३५२॥ प्रथम हेतु उदाहरण ॥ गरजि उठे घन
माननी मान मिटावन काज ॥ धनुटंकारयो भूपनें श-
त्रु नसावन आज ॥३५३॥ द्वितीय हेतु उदाहरण० ॥ मो-
हि परम पद मुक्ति सब तो पदरज घन श्याम ॥ तीनि
लोक को जीतिबो मोहि वसिबो ब्रजगाम ॥३५४॥ इ-
त्यर्थालंकार समाप्तः ॥ अथ शब्दालंकार ॥ इति अ-
र्थालंकार सत बरनि बुद्धि अनुसार ॥ वरनत गिरिधर
दास कवि अब शब्दालंकार ॥३५५॥ अनुप्रास लक्ष-
ण ॥ स्वर विन व्यंजन वरन की जहं समता दरसाइ ॥
स्वर संयुक्त हु कहहिं तेहि अनुप्रास कवि राइ ॥३५६॥
उदाहरण० ॥ मन मोहन सोहन भले लसत रसीले मै-
न ॥ ढाढे गुन गाढे अहैं कहत छबीले नैन ॥३५७॥
अथ छेकानुप्रास लक्षण० ॥ समता बहु व्यंजनन
की क्रम सों जहं इकबार ॥ तहं छेकानुप्रास है सुनिये
सुकवि उदार ॥३५८॥ उदाहरण० ॥ शुभ सोभा सोहै
सही वारी बरचल चाल ॥ सीना सीनो रस रसी बनी ब-
नै बलि बाल ॥३५९॥ वृत्यनुप्रास लक्षण० ॥ समता
बहु व्यंजनन की जहं विनु क्रम इकबारु ॥ कै क्रमसें
बहु बार तहं वृत्ति अलंकृति चारु ॥३६०॥ एकहु व्यंज-
न की जहां समता करति निवास ॥ एक बार बहु बार
करि तहां वृत्यनुप्रास ॥३६१॥ एक वा बहु व्यंजन सम-

ता यथा ॥ लसै शैल पर रूप धरन ववन हरि रस साथ ॥
स्वासे सुखमय चारुरुचि धरे राधिका हाथ ॥ ३६२ ॥
क्रम सों बहु वार व्यंजन समता यथा ॥ बैन बनै वनिता
सुखद व्रज विधु बुध बुधि देन ॥ नौल नील नल ना-
च्छ हरि कोकिल कल किल बैन ॥ ३६३ ॥ एक व्यंजन को
एक वार समता यथा ॥ ठाढ़े गाढ़े गुन बनो सखि देखो
हम श्याम ॥ प्रीति भंत मोहैं महा निसि बसि श्यामा
धाम ॥ ३६४ ॥ एक व्यंजन की बहु वार समता यथा ॥
घेरि जोर करि सोर गुरु तुरे वारि धरि घोर ॥ फिरि घिरि
डोरैं वारि गिरिवर पर चारों ओर ॥ ३६५ ॥ श्रुत्यनुप्रास ल
क्षण ॥ तालु रदादिक थान कृत व्यंजन को उच्चार ॥ ज-
हां सादृश अनुप्रास श्रुति वरनिय करि निरधार ३६६
चतुर जानकी चारु छवि चंचल अच्छ मतच्छ ॥ अ-
कति तंद मुख लखन हिं छन जाइ झरोखे स्वच्छ ॥ ३६७
अंत्यानुप्रास लक्षण ॥ आदि स्वर संयुत जहां व्यं-
जन आवृत होइ ॥ सो अंत्यानुप्रास है कहियतु को-
नहि जोइ ॥ ३६८ ॥ उदाहरण ॥ नीर धीर पर पीर हर सं-
ग अहीर को भीर ॥ नीर तीर जहं कीर बहु लसे सोर धरि
बीर ॥ ३६९ ॥ लाटानुप्रास लक्षण ॥ शब्द अर्थ दू न
दुहुन की जहं पुन रुक्ति प्रकास ॥ तात परज महं भेद
कछु तहं लाटानुप्रास ॥ ३७० ॥ उदाहरण ॥ राजित व
मुख राजिव नयन लसे नयन की कोर ॥ करि करु-
ना करुना करन दुख चोरो दुखचोर ॥ ३७१ ॥ यमक

लक्षण॰॥ स्वर व्यंजन गन की जहाँ आवृत्ति सुकवि-
वरिवरड॥ यमक सोई है दोय विधि इक अखंड इक
खण्ड॥ ३७२॥ सो अखंड सार्थक सबै शब्द जमक को
होय॥ खंड शब्द सार्थक कोऊ कोऊ निरर्थक सोय॥
३७३॥ अखंड यमक उदाहरण॰॥ भूप करन कुंडल
करन करन शत्रु मदनास॥ आदि बरन वर बरन वित
उज्जल बरन प्रकास॥ ३७४॥ खंड उदाहरण॰॥ जन
उधरन अंबुज भरन वर अधरन छबि खानि॥ सर-
न सुखद अरि सरन जित रसरन वित मुद दानि॥
३७५॥ शब्द अर्थ॰॥ आभरन दोऊ इहि विधि भये
समाप्त॥ इनको पढ़ि गुनि गुनिन कों ह्वैहै अति सु-
ख प्राप्त॥ ३७६॥ कवि भारति भूषन परम भारति भू-
षन एहु॥ भारति चरन सनेहु धरि सत कवि इहि प-
ढ़ि लेहु॥ ३७७॥ विधि विधि गुनि शिव शिवहि गुनि
करन चरन रज आस॥ बार बार तिनके चरन बंदत
गिरिधरदास॥ ३७८॥ इति श्रीनंदनंदनपदारबिंद
मलिंद धनाधीश श्रीबाबू गिरिधरदास कवीश्व-
र विरचितं भारतीभूषणमलंकारं समाप्तम्॥